ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 326-328**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता एवं शिक्षा निष्पत्ति का अध्ययन

1. खुशबू
2. डॉ0 विभा चौहान

1. शोध अध्येत्री, 2. शोध निर्देशक, एसोसिएट प्रोफेसर– डिपार्टमेंट ऑफ एजुकेशन जे0 एस0 यूनिवर्सिटी शिकोहाबाद, फिरोजाबाद (उ0प्र0), भारत

Received-20.03.2023, Revised-27.03.2023, Accepted-30.03.2023 E-mail: aaryvart2013@gmail.com

सारांशः ***भारतीय शिक्षा के इतिहास पर विहंगावलोकन करने पर ज्ञात होता है कि वैदिक काल में शिक्षा गुरू या आचार्य केन्द्रित तथा आश्रम आधारित होती थी। काल परिवर्तन की प्रक्रिया में यह विद्यालय या शिक्षण संस्था आधारित हो गई। विश्व इतिहास में सामाजिक परिवर्तन की प्रक्रिया में प्रजातांत्रिक विचारधारा विकसित हुई। जिसका प्रभाव शिक्षा व्यवस्था पर भी पड़ा। शिक्षा राज्य या शासन केन्द्रित न होकर समाज और बाल केन्द्रित हो चुकी है। वर्तमान समय में शिक्षा के बाल केन्द्रित स्वरूप को ही माना गया है। इस प्रकार बालक की शिक्षा पर प्रभाव डालने वाले अनेक पक्ष है। जो इस प्रकार व्यक्त किए जा सकते हैं– वर्तमान युग प्रौद्योगिकी एवं संचार क्रान्ति का युग है। अतः बालक के विकास में उपरोक्त सभी पक्ष प्रभाव डालते हैं। ये सभी पक्ष अलग दिखते हुए भी अन्तर सम्बन्धित है और एक दूसरे से प्रभावित होते हैं। इस अध्ययन में गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता एवं शिक्षा निष्पत्ति का अध्ययन है।***

कुंजीभूत शब्द– गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय, शिक्षण प्रभावशीलता एवं शिक्षा निष्पत्ति, शिक्षण संस्था, सामाजिक परिवर्तन।

योग्य, सक्षम और प्रभावी शिक्षकों के प्रयासों के माध्यम से प्रभावी शिक्षा प्राप्त की जा सकती है। युग की मांगों के आधार पर, शिक्षा के उद्देश्य बहुत तेजी से बदल गए हैं। इन मांगों का शिक्षा व्यवस्था पर सीधा प्रभाव पड़ता है। बदलते समय की चुनौतियों का सामना करने के लिए हर देश अपनी शिक्षा प्रणाली विकसित करता है। भारत एक खुली अर्थव्यवस्था होने के कारण, शिक्षकों की बड़ी जिम्मेदारी है कि वे छात्रों को विकसित देशों में अपने समकक्षों के साथ खड़े होने और देश को आर्थिक रूप से स्वतंत्र बनाने के लिए सक्षम बनाएं। एक शिक्षक को वास्तविक शिक्षा को संभव बनाने, उपलब्धि के स्तर को बढ़ाने, शिक्षार्थियों की क्षमता को फंसाने और नामांकित छात्रों को कक्षा में बनाए रखने के लिए सक्षम, प्रभावी और आध्यात्मिक होना चाहिए।

कोलिन्स इंग्लिश डिक्शनरी इफेक्टिव के अनुसार शिक्षक प्रभावशीलता एक इच्छित परिणाम उत्पन्न करने में सफल होने का एक गुण है। शिक्षक की प्रभावशीलता 'शिक्षक' और 'प्रभावकारिता' से बनी होती है। एक प्रभावी शिक्षक में विषय वस्तु का ज्ञान, संचार में कौशल और व्यक्तिगत गुण जैसे गुण शिक्षार्थियों को ज्ञान या कौशल प्रदान करने में मदद करते हैं। जब व्यक्तिगत गुणों को उजागर किया जाता है तो एक प्रभावी शिक्षक को ऊर्जावान, उत्साही, कल्पनाशील, हास्य की भावना रखने वाला आदि कहा जाता है। यदि कौशल विकास और सामग्री के ज्ञान पर विचार किया जाता है तो प्रभावी शिक्षक को विषय का स्वामी, रचनात्मक और विचारों को स्पष्ट करने में सक्षम वाला उचित कहा जाता है। रीमन एट अल (1998) ने सपश्ट किया है कि व्यवसाय विशेषज्ञता और मनोवैज्ञानिक विकास के उच्चतम स्तर पर शिक्षक चिंतनशील थे; धारणाओं को समझने में सक्षम; विश्वास, विकल्पों के पीछे मूल्य; कक्षा में छात्रों की बौद्धिक उपलब्धियों और पारस्परिक शिक्षा को संतुलित करने में सक्षम; कक्षा को नियंत्रित करने के लिए छात्रों के साथ एक सहयोगी .ष्टिकोण का इस्तेमाल किया और इंटरैक्टिव क्लासरूम बनाने के लिए रचनात्मकता और लचीलेपन को प्रोत्साहित किया।

राव और कुमार (2004) के अनुसार, शिक्षक प्रभावशीलता शिक्षक लक्ष्यों की प्राप्ति के साथ शिक्षक क्षमता और शिक्षक के प्रदर्शन का प्रभावी संबंध है। यह मुख्य रूप से शिक्षक की विशेषताओं पर निर्भर करता है जैसे ज्ञान का आधार, जिम्मेदारी की भावना और जिज्ञासा; छात्र की विशेषताएं जैसे सीखने का अवसर; और शैक्षणिक कार्य; शिक्षण कारक जैसे पाठ संरचना और संचार; सीखने के पहलू जैसे भागीदारी और सफलता; और कक्षा की घटना जैसे पर्यावरण या जलवायु और संगठन और प्रबंधन। यदि शिक्षक इन कारकों का ध्यान रखते हैं, तो उनकी प्रभावशीलता को उच्चतम स्तर तक बढ़ाया जा सकता है। षिक्षा निश्पत्ति को शैक्षिक संगठनों की सफलता और अंततः शिक्षक के पेशेवर जीवन के लिए प्रमुख कारकों में से एक माना जाता है। यदि शिक्षक आध्यात्मिक रूप से स्वस्थ हैं, तो उनके लक्ष्य स्पष्ट हैं और शिक्षा के अंतिम लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अपने छात्रों को प्रभावी तरीके से मार्गदर्शन कर सकते हैं। एक शिक्षक जो आध्यात्मिकता और सीखने के बीच के संबंध से अवगत है, वह सीखने के लिए एक प्रवाहकीय वातावरण बनाए रखने की स्थिति में होगा। आध्यात्मिक बुद्धि व्यक्तित्व और समायोजन का प्रमुख अंग है। मनुष्य की वास्तविकता, लेकिन उनके दिमाग और आत्मा के साथ भी। अतः पिछले अध्ययनों की सीमाओं को ध्यान में रखते हुए वर्तमान अध्ययन उत्तरप्रदेश राज्य के सरकारी एवं गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों की शिक्षक प्रभावशीलता और षिक्षा निश्पत्ति में अन्तर को जानने के लिए किया गया है।

शोध के उद्देश्य–

1. गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत पुरूष षिक्षकों एवं महिला षिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के स्तर

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

का अध्ययन करना।

2. गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत पुरूष शिक्षकों एवं महिला शिक्षकों की शिक्षण निश्पत्ति के स्तर का अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ–

1. गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।

2. गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों की शिक्षण निश्पत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।

परिसीमन– प्रस्तुत शोध एटा जनपद के अवागढ़ ब्लॉक के सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों तक सीमित है।

शोध प्रक्रिया –

शोध विधि – शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया।

न्यादर्श– प्रस्तुत शोध हेतु अवागढ़ ब्लॉक के गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों में अध्यापनरत 100 पुरूष एवं 100 महिला शिक्षकों का चयन यादृच्छिक न्यादर्ष विधि से किया गया।

उपकरण – समस्या के अध्ययन तथा प्रदत्तों के संकलन करने के लिए निम्नांकित प्रमापीकृत उपकरणों का प्रयोग किया गया है –

1. शिक्षक प्रभावशीलता स्केल (टीईएस)–डॉ0 एस0सी0 शर्मा तथा डॉ0 आर0एल0 भरद्वाज
2. शिक्षण योग्यता स्केल (ळज्ै, 2011) का उपयोग किया गया।

चर– प्रस्तुत शोध में चरों का वर्गीकरण निम्नानुसार किया गया है –

1. स्वतंत्र चर – महिला शिक्षक, पुरूष शिक्षक

2. आश्रित चर – शिक्षण प्रभावशीलता एवं शिक्षण दक्षता

सांख्यिकीय विश्लेषण– प्रस्तुत शोध में सांख्यिकीय विष्लेषण हेतु मध्यमान, मानक विचलन, मध्यमान के अंतर की सार्थकता (ज मान) तथा सह संबध की गणना की गयी।

परिकल्पना क्रमांक – 01 गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत पुरूष एवं महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।

गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता

तालिका नं0 1

गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता की तुलना

गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय	न्यादर्श	माध्य	प्रमाणिक विचलन	टी मूल्य	सार्थकता स्तर
शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता	150	256.5	9.68	2.33	0.05 स्तर पर सार्थक
शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता	150	259.5	12.47		

सार्थकता स्तर 0.01 स्तर एवं 0.05 स्तर

तालिका संख्या 1 से स्पष्ट है कि गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का मध्यमान 256.5 और प्रमाणिक विचलन 9.68 है और गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता का मध्यमान 259.5 और प्रमाणिक विचलन 12.47 है। गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन करने के लिए या परिकल्पना की सार्थकता जांचने के लिए टी–मूल्य ज्ञात किया गया। टी–मूल्य का मान 2.33 प्राप्त हुआ। परिगणित टी का मान, 0.01 एवं .05 स्तर पर सार्थकता के लिए आवश्यक सारणी मान 1.96 से अधिक एवं 2.58 से कम है अतः शोधार्थी द्वारा पूर्व में निर्मित शून्य परिकल्पना गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं हैं, 0.05 स्तर पर अस्वीकार की जाती है तथा 0.01 स्तर पर स्वीकार की जाती है। इसका मुख्य कारण शिक्षकों की तुलना में शिक्षिकाओं की शिक्षण गतिविधि अधिक प्रभावी है, आज के वर्तमान परिवेश में महिलाएं घरेलू कार्यो के साथ साथ शिक्षण कार्यो में तत्परता से भाग ले रहीं हैं और अधिक प्रभावी भूमिका निभा रहीं है।

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

परिकल्पना क्रमांक–2 – 2. गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापनरत शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की शिक्षण निष्पत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जायेगा।

तलिका–2

गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की शिक्षा निष्पत्ति की तुलना

गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालय	न्यादर्श	माध्य	प्रमाणिक विचलन	टी–मूल्य	सार्थकता स्तर
शिक्षकों की शिक्षा निष्पत्ति	150	80	9.47	3.3	0.01 स्तर पर सार्थक
शिक्षिकाओं की शिक्षा निष्पत्ति	150	83	5.9		

सार्थकता स्तर 0.01 स्तर एवं 0.05 स्तर

तालिका संख्या 2 से स्पश्ट है कि गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षा निष्पत्ति का मध्यमान 80 और प्रमाणिक विचलन 9.47 है और गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षिकाओं की शिक्षा निपत्ति का मध्यमान 83 और प्रमाणिक विचलन 5.9 है। गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की शिक्षा निष्पत्ति का अध्ययन करने के लिए या परिकल्पना की सार्थकता जांचने के लिए टी–मूल्य ज्ञात किया गया। टी–मूल्य का मान 3.3 प्राप्त हुआ। परिगणित टी का मान 0.05 स्तर एवं 0.01 पर सार्थकता के लिए आवश्यक सारणी मान 1.96 एवं 2.58 से अधिक है अतः शोधार्थी द्वारा पूर्व में निर्मित षून्य परिकल्पना गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की शिक्षा निष्पत्ति में कोई सार्थक अंतर नहीं हैं, अस्वीकार की जाती है। इसका मुख्य कारण शिक्षकों की तुलना में शिक्षिकाओं की शिक्षण गतिविधि अधिक प्रभावी है, आज के वर्तमान परिवेश में महिलाएं घरेलू कार्यो के साथ साथ शिक्षण कार्यो में तत्परता से भाग ले रहीं हैं और अधिक प्रभावी भूमिका निभा रहीं है जिससे उनकी शिक्षा निष्पत्ति पुरूष शिक्षकों की तुलना में अच्छी है।

निष्कर्ष– गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की षिक्षण प्रभावषीलता सम्बन्धी प्राप्तांकों की तुलना करने के लिये माध्य अंक अलग–अलग ज्ञात करके उनके बीच टी–मूल्य प्राप्त किया गया है। टी–मूल्य का मान 2.33 प्राप्त हुआ। परिगणित टी–मूल्य का मान सार्थकता के लिए आवश्यक सारणी मान से अधिक है तथा माध्यों के बीच अन्तर सार्थक पाया गया है। इस प्रकार षून्य परिकल्पना गैर सरकारी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत षिक्षकों एवं शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं हैं, 0.05 स्तर पर अस्वीकार की जाती है। इसका मुख्य कारण शिक्षकों की तुलना में शिक्षिकाओं की शिक्षण गतिविधि अधिक प्रभावी है, आज के वर्तमान परिवेश में महिलाएं घरेलू कार्यो के साथ साथ शिक्षण कार्यो में तत्परता से भाग ले रहीं हैं और अधिक प्रभावी भूमिका निभा रहीं है।

सुझाव– शिक्षक की प्रभावशीलता शिक्षा की भविष्य की सफलता के लिए सबसे महत्वपूर्ण कारक है, जो शिक्षकों के कार्य प्रदर्शन और नए विचारों को नवप्रवर्तन और एकी.त करने की उनकी क्षमता से निकटता से जुड़ा हुआ है। केवल शिक्षक ही ज्ञान और अनुभव प्रदान करके छात्रों के साथ–साथ समाज को भी रोशन करता है। ऐसा कहा जाता है कि छात्रों का अच्छा प्रदर्शन उनके शिक्षकों की प्रभावशीलता पर निर्भर करता है। प्रभावी और सक्षम शिक्षकों के अभाव में पूरी शिक्षा व्यवस्था चरमरा जाती है। चूंकि वर्तमान शोध शिक्षक प्रभावशीलता के आकलन में मदद करता है इसलिए हम उन क्षेत्रों को ढूंढ सकते हैं जहां शिक्षक प्रभावशीलता एवं शिक्षा निश्पत्ति में सुधार की आवश्यकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. कोठारी तथा कोठारी : साख्यिकी सिद्धान्त एवं व्यवहार, म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल।
2. गुप्ता, एस.पी. तथा गुप्ता, अल्का (2008) उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन।
3. सी. एवं मिश्रा, शिवानी (2007) वर्तमान भारतीय शिक्षा, समाज और भ्रष्टाचार, Research Journal of Social and Life Sciences, vol-2, year-01, पृ0 195–204.
4. चवण, माधव (2007) – भारत को शिक्षा–कैसे? योजना, मासिक पत्रिका, योजना भवन, नई दिल्ली, वर्ष–53, अंक–5, पृ0 64–70.
5. जवेरी, एस. (1994) – ''भारतीय ग्रामों में पूर्व–प्राथमिक षिक्षा'' आगा खान षिक्षा सेवा नई दिल्ली।
6. ज्रशिल्ड, ए.टी. (1977) – ''किशोर मनोविज्ञान'', प्रथम संस्करण हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर. जिला साख्यिकी पुस्तिका, जिला, सतना वर्ष, 2014.
7. डब्ल्यू. सी. नार्ड, जीन लेनेन, बेमिंग एवं वेस्टेट (1999) – ''बच्चों की उभरती हुई साक्षरता गतिविधियों पर पारिवारिक साक्षरता वातावरण का प्रभाव''।
8. दुबे, भावेश चन्द्र (2005)– प्राथमिक सतरः आन्तरिक एवं बाह्य अनुभवात्मक शिक्षा प्रक्रिया, प्राथमिक शिक्षक' N.C.E.R.T. की त्रैमासिक पत्रिका, वर्ष 30, अंक +2, पृ. 68–73.

*****